पॉल रुसेसाबागिना

(1954-)

प्रश्न: आप क्या करेंगे जब आपके सामने कुछ भयानक हो रहा हो, और उस आतंक को रोकने के लिए आसपास कोई हीरो नहीं हो?

उत्तर: तब आप खुद एक हीरो बन जायेंगे - अगर आपका नाम पॉल रुसेबागिना हो तो.





पॉल रुसेसाबागिना अफ्रीकी देश रवांडा में एक होटल मैनेजर थे. 1994 के वसंत तक वो सिर्फ एक औसत आदमी थे, जिन्होंने एक सामान्य जीवन व्यतीत किया था. लेकिन उस वसंत ऋतु में उनका शांतिपूर्ण जीवन अचानक बदल गया. 6 अप्रैल को कुछ भयानक हुआ, कुछ इतना भयानक हुआ कि उसे समझाना मुश्किल था. रवांडा में बहुसंख्यक जातीय लोग, हुतस, अल्पसंख्यक समूह, तुत्सी के खिलाफ हत्या की होड़ में लग गए. क्यों? हुतस द्वारा नियंत्रित रवांडा सरकार ने अपने हुतु नागरिकों को हथियारों की सप्लाई की, और उन्हें सभी तुत्सीओं को देखते ही मारने का आदेश दिया. सरकार के नेताओं ने कहा कि तुत्सी लोग किसी तिलचट्टे से बेहतर नहीं थे और इसलिए वे मारने के योग्य थे. सरकार के नेताओं ने कहा, जो कोई हुतु इस आदेश का पालन नहीं करेगा वो खुद मारा जाएगा. फिर, सौ दिनों के लिए, आम लोग, जो पहले शांतिपूर्ण नागरिक थे, अब रातों-रात क्रूर हत्यारों में तब्दील हो गए. उन्होंने उन सभी तुत्सी - पुरुषों, महिलाओं, बच्चों का वध किया जो उन्हें मिले... ऐसा लग रहा था जैसे हुतुस लोगों ने अपना दिमाग और अपनी मानवता खो दी हो.

इस जाग्रत दुःस्वप्न के बीच में पॉल रुसेसाबागिना जो खुद एक हुतु थे उस बेहद अँधेरी दुनिया में, चमकने वाली रोशनी बनें. न केवल पॉल ने अपने साथी नागरिकों की हत्या करने से इंकार किया - उन्होंने अपने होटल को तुत्सी लोगों के लिए एक सुरक्षित आश्रय में बदल दिया. उन्होंने विभिन्न कमरों में तुत्सी लोगों छिपाया. दिन-ब-दिन, हुतुस लोगों ने बार-बार पॉल को जान से मारने की धमकी दी और उन सभी लोगों को भी जिन्हे उन्होंने छिपाया था.

लेकिन हर बार गुस्से में जब हुतुस लोग होटल में आए, तो पॉल ने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके उन्हें चकमा दिया और अक्सर उन्हें शांत करने के लिए मुफ्त में शराब पिलाई ताकि वे किसी को मारें नहीं. पॉल की रणनीति थी - उनसे बात करना, और उनका ध्यान भटकाते रहना. और उस रणनीति ने अच्छा काम किया! उससे होटल के अंदर छिपा एक भी व्यक्ति मारा नहीं गया.

बिना किसी हथियार के, सिर्फ अपने दिमाग का इस्तेमाल करके, इस विनम्र होटल प्रबंधक ने अन्य लोगों की रक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी. नतीजा: उन्होंने 1,268 लोगों की जान बचाई. इन बचे लोगों को ज़िंदा रहने के लिए सुरक्षित रूप से रवांडा से बाहर ले जाया गया. नरसंहार के बाद के वर्षों में, पॉल की वीरता पर आधारित "होटल रवांडा" नामक एक फिल्म बनी. पॉल अब बेल्जियम में रहते हैं, जहां वो होटल रवांडा रुसेबागिना फाउंडेशन चलाते हैं, जो रवांडा और अन्य अफ्रीकी देशों में राजनीतिक समस्याओं वाले बच्चों और महिलाओं को धन मुहैय्या कराती है. अपनी वीरता के बारे में, उन्होंने कहा, "मनुष्य होना हर व्यक्ति का एक मिशन होना चाहिए. मैंने जो किया है वो किसी को, और अन्य लोगों को भी करना चाहिए था, इसलिए मेरी वीरता में कोई विशेष सबक नहीं है." बड़ी बुराई के सामने भी पॉल रुसेबागिना ने घुटने नहीं टेके और वो करने का साहस जो किसी भी सभ्य इंसान को करना चाहिए था. और यह उस प्रकार की वीरता है जिसके हम सभी काबिल हैं.

